अप्रकाशित आरामसोहाकहा (पद्य) : एक परिचय

—डॉ० प्रेम सुमन जैन
सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

प्राकृत कथा साहित्य में आरामशोभाकथा एक महत्वपूर्ण लौकिक कथा है। जिनपूजा के महात्म्य को प्रतिपादित करने के उद्देश्य से यह कथा उदाहरण के रूप में कही गयी है। प्राकृत, संस्कृत, गुजराती एवं हिन्दी भाषा में आरामशोभाकथा को कई कथाकारों ने प्रस्तुत किया है। किन्तु मूल प्राकृत कथा अभी तक स्वतंत्र रूप से प्रकाशित नहीं हो सकी है। इस अप्रकाशित आरामसोहाकहा की पाण्डुलिपि मुझे लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति मंदिर, अहमदाबाद के ग्रन्थभण्डार का सर्वेक्षण करते समय २-३ वर्ष पूर्व प्राप्त हुई थी। प्राकृत गाथाओं में निबद्ध इस कथा की यह अभी तक उपलब्ध एकमात्र पाण्डुलिपि है। यद्यपि इस कथा की अन्य प्रतियां विभिन्न ग्रन्थभण्डारों में प्राप्त होने के संकेत हैं, किन्तु अभी वे उपलब्ध नहीं हो सकी हैं।

आरामसोहाकहा की इस पाण्डुलिपि में कुल १० पन्ने हैं, जो दोनों ओर लिखे हैं। इसमें कुल ३२० प्राकृत गाथाएं हैं। किन्तु आदि-अन्त में कोई प्रशस्ति नहीं है। अतः रचनाकार, लिपिकार आदि के सम्बन्ध में कुछ भी ज्ञात नहीं होता है। प्राकृत साहित्य के अन्य किसी ग्रन्थ में भी प्राकृत पद्यों में रचित आरामसोहाकहा एवं उसके कर्त्ता के सम्बन्ध में कोई उल्लेख प्राप्त नहीं है। अतः अभी इस रचना को अज्ञातकर्तृक ही मानना होगा। आरामसोहाकहा की परम्परा एवं अन्य पाण्डुलिपियों के सम्बन्ध में विचार करने के पूर्व इस कथा को संक्षेप में प्रस्तुत करना उपयोगी होगा।

कथा वस्तु

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में कुशार्त देश है। वहाँ के वलासक नामक ग्राम में अग्निशर्मा नामक ब्राह्मण रहता था। उसके ज्वलनशिखा नामक पत्नी थी। उनके विद्युत्प्रभा नामक पुत्री थी। जब वह आठ वर्ष की थी तभी किसी रोग से पीड़ित होकर उसकी मां का देहावसान हो गया। तब घर का सारा काम विद्युत्प्रभा के ऊपर आ पड़ा। गायों को चराने, घर का काम करने और पिता की सेवा-टहल करने में वह बहुत थक जाती थी। अतः एकदिन उसने पिता से कह दिया कि वह दूसरी शादी करके पत्नी ले आवे। इससे उसे घर के कामों से छुटकारा तो मिलेगा। किन्तु विद्युत्प्रभा की जो सौतेली मां आयी वह इतनी आलसी और कुटिल थी कि विद्युत्प्रभा को पहले जैसा ही घर-बाहर के कार्यों में अकेले जुटना पड़ता था। इसे वह अपने कर्मों का फल मानती हुई सहन करने लगी।

एकबार विद्युत्प्रभा जब गायों को चरा रही थी तो वहाँ उसने एक सांप रूपी देवता की प्राण रक्षा की। इससे प्रसन्न होकर उस नागदेवता ने उसे वरदान दिया कि उसके सिर पर एक हरा-भरा कुंज (आराम) सदैव बना रहेगा, जिससे उसे कभी धूप नहीं लगेगी। यह कुंज आवश्यकतानुसार छोटा-बड़ा होता रहता था। एकदिन पाटलीपुत्र के राजा जितशत्रु ने विद्युत्प्रभा के साहस और कुंज से प्रभावित होकर उसे अपनी पटरानी बना लिया। विद्युत्प्रभा को वह आरामशोभा के नाम से पुकारने लगा। उनके दिन सुख से व्यतीत होने लगे।

इधर आरामशोभा की सौतेली मां के एक पुत्री उत्पन्न हुई। उसके जवान होने पर उस सौतेली मां ने चाहा कि जितशत्रु राजा आरामशोभा के स्थान पर उसकी पुत्री को पटरानी बना ले। अतः उसने गर्भवती आराम-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शोभा को अपने घर बुलाया और उसके पुत्र के जन्म हो जाने पर उसे एक कुँए में डाल दिया और उस पुत्र के साथ अपनी पुत्री को आरामशोभा बनाकर राजा के पास भिजवा दिया। राजा को नकली आरामशोभा पर शक जरूर हुआ किन्तु पुत्र की प्रसन्नता में उसने विशेष ध्यान नहीं दिया।

असली आरामशोभा को अपने पुत्र को देखने की बड़ी इच्छा हुई तो उसने उसी नागदेवता को स्मरण किया। नागदेवता की कृपा से वह पुत्र का दर्शन करने रात्रि में जाने लगी। किन्तु सूर्योदय के पूर्व उसे वापिस लौटना पड़ता था। एक दिन राजा ने असली आरामशोभा को पकड़ लिया और वापिस नहीं आने दिया। तब से उसके सिर से वह कुँज गायब हो गया। किन्तु आराम-शोभा को पुनः अपना पद और गौरव प्राप्त हो गया। उसने अपनी सौतेली माँ और बहिन को भी क्षमा कर दिया।

एकदिन आरामशोभा राजा के साथ वीरभद्र मुनि के समीप गई। वहाँ उसने अपने पूर्वजन्म के सम्बन्ध में उनसे पूछा कि मेरे ऊपर छत्र के आकार का कुंज क्यों स्थित हुआ और मुझे पहले दुःख और बाद में सुख क्यों प्राप्त हुए? मुनिराज ने उसके पूर्वजन्म की कथा कही।

चम्पा नगरी में कुलधर वणिक रहता था। उसके आठ पुत्रियाँ थीं। सात की तो अच्छे घरों में शादियाँ हो गयी थीं किन्तु आठवीं पुत्री पुण्य-रहित होने के कारण अवि-वाहित थी। तभी उस नगर में नन्दन नामक एक वणिक-पुत्र आया। कुलधर ने उससे अपनी आठवीं पुत्री का विवाह कर दिया और उसके साथ उसे दक्षिण भारत भेज दिया किन्तु वह नन्दन वणिक रास्ते में ही अपनी पत्नी को छोड़कर चला गया।

वह कुलधर की पुत्री भटकती हुई दूसरे नगर में पहुँच-कर मणिभद्र सेठ के घर कार्य करने लगी। मणिभद्र उसे पुत्री की भाँति रखने लगा। एकबार जब मणिभद्र सेठ ने अपने यहाँ एक जिनमन्दिर बनवाया तब वह कुलधर की पुत्री वहाँ विनयपूर्वक जिनभक्ति करने लगी। उस मणिभद्र सेठ के एक बगीचा था जो सिंचे जाने पर भी सूखता जा रहा था। इससे वह सेठ बहुत दुःखी था। तब कुलधर की पुत्री ने चार प्रकार के आहारमात्र का व्रत लेकर शासन देवी की पूजा की। उसकी तपस्या के फल से वह सूखता हुआ बगीचा फिर से हरा-भरा हो गया। इससे प्रसन्न होकर सेठ ने उस पुत्री को बहुत-सा धन पुरस्कार में दिया। उस पुत्री ने उस धन से जिन प्रतिमा के ऊपर तीन छत्र और मुकुट आदि बनवा दिये तथा मन्दिर में रथ इत्यादि का दान दिया। इस प्रकार धार्मिक कार्य करते हुए वह पुत्री मरणोपरान्त स्वर्ग में देवता हुई। देवता के भोगों को भोगकर वह विद्युत्प्रभा के रूप में उत्पन्न हुई। पूर्वजन्म के बचपन में धर्म न करने के कारण वह विद्युत्प्रभा बचपन में दुःखी हुई, जिनप्रतिमा पर छत्र प्रदान करने से उसे सिर पर कुंज की शोभा प्राप्त हुई और तपश्चरण आदि करने के कारण उसे राज्य-सुख प्राप्त हुआ।

मुनि के द्वारा इस प्रकार अपना पूर्वजन्म वृत्तान्त सुनकर आरामशोभा ने पति के साथ वैराग्य धारण कर तपश्चरण किया एवं सद्गति प्राप्त की।

कथा की लोकप्रियता

आरामशोभा कथा जैन कथाकारों को बहुत प्रिय रही है। अतः प्राकृत, संस्कृत एवं गुजराती भाषाओं में इसके कई संस्करण प्राप्त होते हैं। उनकी संक्षिप्त जानकारी यहाँ प्रस्तुत की जा रही है।

प्राकृत संस्करण

(१) अभी तक प्राप्त जानकारी के अनुसार आचार्य श्री प्रद्युम्नसूरिकृत मूलशुद्धिप्रकरण पर श्री देवचन्द्रसूरि द्वारा लिखित वृत्ति में सर्वप्रथम तीर्थङ्कर भक्ति के उदाहरण रूप में आरामशोभा कथा प्राकृत गद्य एवं पद्य में प्रस्तुत की गयी है।[१] आरामशोभा के पुनः पटरानी पद प्राप्त करने की कथा तक प्राकृत गद्य एवं पद्य का प्रयोग किया गया है एवं उसके बाद पूर्वजन्म की कथा केवल गाथाओं में कही गयी है। कथा इस प्रकार प्रारम्भ होती है:

तत्थ य परिस्समकिलंतनर-नारी हिययं व बहुमासं,

[१] भोजक, अमृतलाल (सं०), मूलशुद्धिप्रकरण (प्रथम भाग), अहमदाबाद, १९७१, पृ० २२-३४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महामुणिव्व सुसंवरं, कामिणीयणसीसंव ससीमंतयं अत्थि थलासयं नाम महागामं ।

कथा के अन्त में कहा गया है :

मणुयत-सुरत्ताइं कमेण सिवसंययं लहिस्संति ।
एयं जिणभत्तीए अणण्ण सरिसं फलं होइ ॥२०१॥

यह मूल शुद्धिप्रकरणवृत्ति ई० सन् १०८६-९० में रची गयी थी । अतः आरामशोभा कथा का अब तक ज्ञात यह प्राचीन रूप है ।

(२) प्राकृत की ३२० गाथाओं में आरामसोहाकहा कि रचना किसी अज्ञात कवि ने की है । उसी का परिचय इस लेख में दिया जा रहा है । यह रचना भाषा की दृष्टि से १२वीं शताब्दी की होनी चाहिये । इसका प्रारम्भ इस प्रकार हुआ है :

झविज्ज मूलभूअं दुवारभूअं पइव्व निहिभूअं ।
आहारभायणमिमं सम्मत्तं चरणघमस्स ॥१॥

* * *

इस सम्मं सम्मत्तं जो समणो सावगो घरइ हिअए ।
अपुव्व सो इड्ढिं लहेह आरामसोहु व्वं ॥४॥
कारामसोहवुत्ता कह समत्ता तए सिरी लद्धा ।
इअपुट्ठो अ जिणंदो आणंदेणं कहइ एअं ॥५॥

यहाँ यह स्पष्ट है कि सम्यक्त्व का महत्व प्रतिपादन कर उसके उदाहरण में आरामशोभा की कथा कही गयी है । पांचवीं गाथा में आणंदेणं शब्द विचारणीय है । ऐसा प्रतीत होता है कि आनन्द नामक व्यक्ति द्वारा पूछे जाने पर जिनेन्द्र ने इस कथा को कहा है । यह आनन्द श्रावक है अथवा साधु यह शोध का विषय है ।

इस ग्रन्थ के अन्त में कोई प्रशस्ति नहीं है । केवल इतना कहा गया है कि 'हे भव्व जीव ! आरामशोभा की तरह आप भी सम्यक्त्व में अच्छी तरह प्रयत्न करें, जिससे कि शीघ्र ही शिव-सुख को प्राप्त करें ।'

आरामसाहिआ विव इअ सम्मं दंसणम्मि भो भव्वा ।
कुणह पयतं तुम्भे जह अहरा लहह सिवसुक्खं ॥३२०॥

इति सम्यक्त्व उपरि आरामशोभा कथा ।

॥ श्री शुभं भवतु ॥

मूलशुद्धिप्रकरणवृत्ति की आरामसोहाकहा एवं अज्ञातकृत कथा की गाथाओं में कोई समानता नहीं है । सूक्ष्म अध्ययन करने पर भाषा की कुछ समानता मिल सकती है । कथा अंश लगभग एक जैसा है । कुछ स्थान के नामों में अन्तर है ।

इस प्राकृत आरामशोभा कथा की अब तक निम्न पाण्डुलिपियों का पता चला है : [२]

१ लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति मंदिर, अहमदाबाद, (प्रस्तुत पाण्डुलिपि), नं० १६०५
२ विजयधर्म लक्ष्मी ज्ञान-मंदिर, बेलनगंज, आगरा, नं० १६०१
३ देला उपासरा भण्डार, अहमदाबाद, नं० १३४
४ देला उपासरा भण्डार, अहमदाबाद, नं० १००
५ विमलगच्छ उपासरा ग्रन्थ भण्डार, फलूसापोल, अहमदाबाद, नं० ६२७, ८५२
६ विमलगच्छ उपासरा ग्रन्थभण्डार, हजपटेलपोल, अहमदाबाद, डब्बा नं० १५, पोथी नं० ५
७ भण्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना, १८८७-९१ का कलेक्शन, नं० १२९३
८ भण्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना, पीटर्सन रिपोर्ट १, नं० २३९
९ लीबंडी जैन ग्रन्थ भण्डार, नं० ६८१

इन पाण्डुलिपियों की प्राप्ति एवं उनके अवलोकन से पता चलेगा कि इनमें कोई प्रशस्ति आदि है अथवा नहीं । सम्पादन-कार्य के लिये भी इनसे मदद मिल सकती है ।

इस ग्रन्थ में कुछ उद्धरणों का प्रयोग हुआ है । अन्य ग्रन्थों में उनकी खोज करने से इस ग्रन्थ के रचनाकाल का निर्धारण हो सकता है । कुछ उद्धरण यहाँ प्रस्तुत हैं—

(क) दंसण-भट्ठो भट्ठो दंसण भुट्ठस्स नत्थि निव्वाणं ।
सिज्झंति चरण-रहिआ दंसणरहिआ न सिज्झंति ॥३॥[३]

(ख) बालस्स माय-मरणं भज्जा-मरणं च जोव्वणारमे ।
थेरस्स पुत-मरणं तिन्नि वि गुरुआइ दुक्खाइं ॥१२॥

[२] वेलणकर, एच० डी०, जिनरत्नकोश, पूना १९४४, पृ० ३३-३४ ।

[३] यह गाथा दर्शनपाहुड़ (कुन्दकुन्द) एवं भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक में यथावत् उपलब्ध है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(ग) पुव्वभवे जं कम्मं सुहासुहं जेण जेण भावेण।
जीवेण कयं तं चिअं परिणमई तम्मि कालम्मि ॥१३॥

(घ) विहलं जो अवलंबई आवइपडिअं व जो समुद्धरइ।
सरणागयं च रक्खइ तिहिं तिसु अलंकिआ पुहवी ॥३६॥

(ङ) धम्मेण सुह-संपया सुभगया नीरोगया आवया-चतं।
दीहरभाउअं इह भवे जम्मो सुरम्मे कुले ॥२२३॥

(च) दिव्वंरूवमउव्वं जुव्वणभरो सती सरीरे जणे।
किती होइ सुधम्मओ परभवे सग्गापवग्गस्सिरी ॥२२४॥

(३) आरामशोभाकथा की तीसरी रचना प्राकृत गद्य में है। हरिभद्रसूरिकृत 'सम्यक्त्वसप्तति' पर संघतिलक ने ई० सन् १३६५ में प्राकृत में वृत्ति लिखी है।[४] इस वृत्ति में आरामशोभा की जो कथा दी गयी है उसका प्रारम्भ इस प्रकार होता है :

इहेव जम्बूरूक्खालंकियदीव मज्झट्ठिए अक्खंडछक्खंडमंडिए बहुविहसुहनिवह निवासे भारहे वासे असेसलच्छिसंनिवेसो अत्थि-कुसट्टदेसो।

इस पूरी रचना में ३० प्राकृत एवं संस्कृत के पद्यों का भी प्रयोग हुआ है। अन्त में कहा गया है :[५]
आरामसोहाइ चरित्तमेयं निसामिऊणं सवणाभियामं।
कुणेह देवाण गुरुणवेया-वच्चं सया जेण लहेह सुक्खं ॥

इस कथा को मूल रूप में डा० राजाराम जैन ने पाइयगज्ज-संगहो नामक अपनी पाठ्यपुस्तक में प्रकाशित किया है। यद्यपि विभिन्न प्रतियों के आधार पर इसका सम्पादन किया जाना शेष है। ला० द० संस्कृति विद्यामंदिर, अहमदाबाद में इस प्राकृत (गद्य) आरामसोहा कथा की २ प्रतियां प्राप्त हैं। संख्या—३२६० एवं २५६०।

संस्कृत संस्करण

(४) संस्कृत में जिनहर्षसूरि (ई० सन् १४८१), मलयहंसगणि एवं माणिक्य सुन्दरगणि ने आरामशोभा कथा लिखी है। यह ज्ञात नहीं हो सका है कि ये संस्करण प्रकाशित हैं या नहीं। इनकी पाण्डुलिपियां विभिन्न ग्रन्थ भण्डारों में प्राप्त हैं।[६] संस्कृत के जैन कथा-ग्रन्थों में आरामशोभाकथा का उल्लेख किया गया है।[७]

गुजराती संस्करण

(५) आरामशोभाकथा गुजराती में भी लिखी गयी है। गुजराती के 'आरामशोभारास' की भूमिका में सम्पादकों ने इस कथा की निम्नांकित गुजराती रचनाओं का उल्लेख किया है :[८]

(क) आरामशोभारास (राजकीर्ति), ई० सन् १४७६।

(ख) आरामशोभा चौपाई (विनयसमुद्र), ई० सन् १५२७।

(ग) आरामशोभाचरित (पुंज ऋषि), ई० सन् १५६६।

(घ) आरामशोभा चौपाई (समयप्रमोद), ई० सन् १६१० के लगभग।

(ङ) आरामशोभा चौपाई (राजसिंह), ई० सन् १६३१।

(च) आरामशोभा चौपाई (दयासार), ई० सन् १६४८।

(छ) आरामशोभारास (जिनहर्ष), ई० सन् १६६०।

इस तरह ज्ञात होता है कि आरामशोभाकथा जनजीवन में बहुत लोकप्रिय रही है। जिनभक्ति के लिये

[४] सम्यक्त्व सप्तति (संघतिलककृतवृत्तिसहित), सं० ललितविजय मुनि, १६१६।

[५] मुनि यशोभद्र (सं०), आरामसोहाकहा, नेमिविज्ञान ग्रन्थरत्न (३), सूरियपुर, सन् १६४०।

[६] (क) जैन ग्रन्थ भण्डार, लींबड़ी, पोथी नं० ७०१।
(ख) श्री जैन संघ भण्डार, पाटण, डब्बा नं० ६, पोथी नं० ६।

[७] (क) देसाई, जैन साहित्यनी इतिहास, १६३३, पृ० ४७१।
(ख) चौधरी, जी० सी०, जैन साहित्य का वृहत् इतिहास, भाग ६, पृ० ४१७।

[८] कथा मंजूषा (भाग ७)—आरामशोभारास (सं०), जयंत कोठारी एवं कीर्तिका जोशी, अहमदाबाद, १६८३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मध्यकाल में यह प्रमुख दृष्टांत रहा है। कथा की लौकिकता के कारण इसे अधिक प्रसिद्धि मिली है।

हिन्दी संस्करण

(६) आरामशोभाकथा को किसी हिन्दी लेखक ने स्वतन्त्र रूप से नहीं लिखा है। किन्तु प्राचीन कथा के आधार पर हिन्दी में उसका संक्षिप्त रूप प्रस्तुत किया है। श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री द्वारा सम्पादित जैन कथा, भाग ६६ में आराम शोभाकथा प्रस्तुत की गयी है।[९] अमर चित्र कथा सीरिज में भी 'जादुई कुंज' के नाम से इस कथा को प्रस्तुत किया गया है।*

कथा के मानक रूप एवं अभिप्राय

आरामशोभाकथा एक लोककथा है। अतः इसमें लोकतत्त्वों की भरमार है। इस कथा के मानक रूप इस प्रकार हैं :

१. अकेली बालिका पर घर के कार्यों का भार
२. सर्प का मनुष्य की वाणी में बोलना
३. कृतज्ञ नागकुमार द्वारा साहस के कार्य के लिये वरदान देना।
४. छत्र के रूप में कुंज का आश्चर्य
५. राजा द्वारा गुणी गरीब कन्या से विवाह
६. सौतेली माता द्वारा सौतेली पुत्री को मारने का प्रयत्न
७. नागकुमार द्वारा अदृश्य रूप से सहायता
८. कुँए में ढकेलना किन्तु वहाँ पर भी रक्षा
९. पुत्र-जन्म पर माँ को परिवर्तन कर देना
१०. असली पत्नी को राजा के द्वारा बाद में पहिचान लेना
११. पुत्र-दर्शन के लिये देवता की समय-मर्यादा की शर्त
१२. शर्त तोड़ने पर देवता के वरदान का लुप्त होना
१३. नायिका द्वारा सौतेली मां एवं बहिन को क्षमा प्रदान करना
१४. मुनि से पूर्व-जन्म का वृत्तान्त-श्रवण
१५. पति द्वारा जंगल में छोड़कर चले जाना
१६. धर्मपिता सेठ द्वारा आश्रय देना
१७. अपने अतिशय गुणों से धर्मपिता को संकट से बचाना
१८. जिनमंदिर-निर्माण और जिनपूजा के फलस्वरूप सद्गति
१९. कर्मफल शृंखला
२०. वर्तमान जीवन की घटनाओं का तालमेल पूर्वजन्म की घटनाओं से बैठाना

इन मानकरूपों को देखने से पता चलता है कि १-१३ तक के मानकरूप एक लौकिक कथा के हैं। उनका जैनधर्म से कुछ लेना-देना नहीं है। और १४-२० तक के मानक-रूप किसी भी धर्म के साथ जोड़े जा सकते हैं। वस्तुतः आरामशोभा कथा में दो कथाओं को एक साथ मिला दिया गया है।

परवर्ती कथाओं पर प्रभाव

आरामशोभाकथा का मूल अभिप्राय माता-विहीन पुत्री और सौतेली माता का स्वार्थ है। इस अभिप्राय को पूरी तरह व्यक्त करने के लिये कई कथाकारों ने लेखनी चलाई है। सन् ११५० में अपभ्रंश कवि उदयचन्द्र ने 'सुगन्धदशमीकथा' लिखी है। इसकी कथा का उत्तरभाग आरामशोभाकथा से मिलता जुलता है। डा० हीरालाल जैन ने इसकी कुछ समान विशेषताओं की ओर संकेत किया है।[१०] सौतेली बेटी की अवहेलना एवं अपनी

[९] श्री पुष्कर मुनि, जैन कथा, भाग ६६, उदयपुर, १९७६।

*'जादुई कुंज' मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी 'प्रथम' के जैन कहानियाँ, भाग १२, में प्रकाशित कथा पर आधारित है। लेखक ने जैन कहानियाँ में प्रकाशित कथा का उल्लेख नहीं किया है। इसका अंग्रेजी अनुवाद भी Jaina Stories में प्रकाशित है। —संपादक

[१०] जैन, हीरालाल, सुगंधदशमीकथा, १९४८, भूमिका, पृ० १८।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सगी पुत्री को उसका पद दिलाने की चाह दोनों में समान है, यद्यपि तरीकों में अन्तर है। सौतेली माता द्वारा सौतेली पुत्री की अवमानना करने की घटना सुगन्धदशमी कथा के संस्कृत (सन् १४७२), गुजराती (१४५०), मराठी (१८ वीं सदी) एवं हिन्दी (१७५०) संस्करणों में भी प्राप्त होती है।

सौतेली माता का अपनी पुत्री को रानी बनाने के निष्फल प्रयास एवं सौतेली पुत्री को सताने की घटनाएं विश्वसाहित्य में भी प्राप्त होती हैं। डा० जैन ने दो कथाओं का उल्लेख किया है। फ्रेंच कहानी 'सिन्ड्रेला' में उसकी सौतेली मां उसे उत्सव में नहीं जाने देती और अपनी पुत्रियों को सजाकर वहाँ भेजती है। किन्तु राजकुमार अन्ततः सिन्ड्रेला को ही अपनी रानी बनाता है।[११] जर्मन कहानी 'अश्पुटैल' में जो सौतेली लड़की है वह बिल्कुल आरामशोभा से मिलती-जुलती है। हैजल वृक्ष आरामशोभा के जादुई कुंज की तरह मददगार के रूप में प्रस्तुत किया गया है। अन्ततः 'अश्पुटैल' को राजकुमार अपनी रानी बना लेता है।[१२] इस तरह अभी आरामशोभा कथा की भारतीय एवं विश्वसाहित्य की कथाओं के साथ तुलना करने से और भी नये तथ्य सामने आ सकते हैं।

११ द स्लीपिंग ब्यूटी एण्ड अदर फेयरी टेल्स फ्राम द ओल्ड फ्रेंन्च (रिटोल्ड बाइ ए० टी० विलचर-कोडच)।

१२ जेकब लुडविक कार्लग्रिम, दि किंडर उण्ड हाउस मारचेंन, (अंग्रेजी अनुवाद : ग्रिम्सटेल्स)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org